अजूं सुध तोको न होत, तेरी क्यों हुई ऐसी रसम।
याद कर अपना वतन, जो तें सुनी बात खसम।। ११ ।।

तुझे अभी भी होश नहीं आता। तेरी ऐसी हालत क्यों हो गई? अपने धनी की जो बातें सुनी हैं उनसे अपने घर की बातें याद कर।

तूं भूल जात क्यों वचन, जो श्रीधाम धनी कहे आप।
एक आधा सुकन विचारते, तो पलक न छोड़े मिलाप।। १२ ।।

धाम-धनी ने अपने मुख से तुझे जो वचन कहे हैं, यदि उनमें से एक आधा वचन भी विचार कर ले तो तू एक क्षण के लिए भी धनी का साथ नहीं छोड़ेगा।

तोको कहूं अभागी अकरमी, जो जाग्या न एते सोर।
सात बेर तोको कहूं सोहागी, जो तूं उठे अंग मरोर।। १३ ।।

हे अभागे बदनसीब जीव ! इतना जगाने पर भी तू नहीं जागा? अब भी तू अंग मरोड़कर जाग जाए तो तुझे सात बार सौभाग्यशाली (सुहागी) कहूंगी।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ३३५ ।।

मेरे जीव सोहागी रे, जिन छोड़े पिउ कदम।
दूसरी बेर माया मिने, तुझ कारन आए खसम।। १ ।।

हे मेरे सुहागी (सौभाग्यशाली) जीव ! अब प्रीतम के चरण नहीं छोड़ना। तेरे वास्ते ही धनी माया में दूसरी बार आये हैं।

गुन धनी के याद कर, पकड़ पिउ के पाए।
सुखे बैठ सुखपाल में, देसी वतन पोहोंचाए।। २ ।।

अब धनी की कृपा (मेहरबानी) को याद कर। उनके चरण पकड़ ले, वह तुझे सुखपाल में बैठाकर घर (परमधाम) पहुंचा देंगे।

खेल हंस कर बातड़ी, पेहेचान अपना पिउ।
दो बेर धनी तुझ कारने, आए जान अपना जिउ।। ३ ।।

तुम हंसते खेलते हुए अपने धनी को पहचानो और उनसे बातें करो। धनी तुम्हें अपना जानकर दो बार माया में आए हैं।

हैं कैसे धनी देख तूं, तोसों करी है ज्यों।
आप ना रख्या आपना, सो याद न कीजे क्यों।। ४ ।।

उन्होंने तेरे पर जो एहसान किए हैं, उससे उनकी पहचान कर। उन्होंने अपनापन भी अपने पास नहीं रखा। उसको क्यों याद नहीं करता?

कर हिंमत बांध कमर, ले हुकम सब हाथ।
पिउ पास हो पेहेचान के, और छोड़ सब साथ।। ५ ।।

उठ, हिम्मत कर। कमर कसकर धनी के हुकम को अपने सिर चढ़ा और पिया की पहचान कर माया के सब साथियों को छोड़ दे।

Nijanand App

आप कहियो अपने साथ को, जो तुझे खुले वचन।
सुध तो नहीं कछू साथ को, पर तो भी अपने सजन।। ६ ।।

जो भेद वाणी के तुझे खुले, वह अपने सुन्दरसाथ को बताना। सुन्दरसाथ को माया में सुध नहीं है फिर भी वह तो अपने साथी हैं।

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ३४१ ।।

मेरे साथ सोहागी रे, पिउसों क्यों न करो पेहेचान।
पेहेले चले पेहेचान बिना, फेर आए सो अपनी जान।। १ ।।

हे मेरे सुहागी (सौभाग्यशाली) सुन्दरसाथ ! तुम पिया की पहचान क्यों नहीं करते? पहले भी तुम्हारी नासमझी के कारण वह चले गए थे। अब दुबारा अपना साथ समझकर आए हैं।

सोई पिउ सोई बातड़ी, फेर सोई करे पुकार।
कारन अपने पिउ को, आंखों आवे जलधार।। २ ।।

यह वही पिया हैं और वही चर्चा है। उसी तरह सोए हुए को जगाते हैं। हमारे वास्ते वह अपनी आंखों में आसूं भर-भर कर रोते हैं।

सोई नसीहत देत सजन, खैंचत तरफ वतन।
पिउ पुकारें बेर दूसरी, अब क्यों होंए पीछे आपन।। ३ ।।

धनी वतन (धाम) की तरफ चलने के लिए वैसा ही सिखापन देते हैं। दूसरी बार आकर पुकार कर रहे हैं। अब हम पीछे क्यों रहें?

सोई कूकां करे पेहेले की, सो क्यों न समझो बात।
न तो दिन उजाले खरे दो पोहोरे, अब हो जासी रात।। ४ ।।

धनी पहले की तरह से ही जोश में चर्चा करते हैं। इस बात को तुम क्यों नहीं समझते? अगर अब भी नहीं समझे तो दिन के दोपहर जैसे उजाले में रात हो जाएगी।

फेर पटकोगे हाथड़े, और छाती देओगे घाउ।
चल जासी पिउ हाथ से, फेर न पाओगे दाउ।। ५ ।।

फिर हाथ पटकोगे और छाती पीटोगे जब पिया चले जाएंगे। फिर ऐसा समय नहीं पाओगे।

विलख विलख कहे वचन, रोए रोए किए बयान।
प्रेम करे अति प्रीतसों, पर साथ को सुध न सान।। ६ ।।

धनी ने बिलख-बिलखकर, रो-रोकर वाणी से समझाया और रो-रोकर घर की बातें बताईं। सुन्दरसाथ से बड़ा प्रेम भी किया, फिर भी साथ को सुध नहीं आई।

माया देखी बीच पैठ के, पिउ के उजाले तुम।
विध विध खेल देखावने, पिउ ल्याए तारतम।। ७ ।।

तुमने प्रीतम के ज्ञान के उजाले में माया को माया के संसार में बैठकर देखा। तुमको तरह-तरह से खेल दिखाने के लिए धनी तारतम ज्ञान लाए हैं।

Nijanand App